रूसी और पूसी

एक चित्रकथा

वी. सुतेयेव

एकलव्य का प्रकाशन

रूसी पूसी

Rusi Pussy

चित्र और कहानीः वी. सुतेयेव

स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक चित्रकथा

प्रगति प्रकाशन, मास्को के सौजन्य से प्रकाशित।

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

किफायती संस्करणः अप्रैल 2008 / 7000 प्रतियाँ

कागज़ः 100 gsm मेपलिथो

ISBN: 81-87171-91-x

मूल्यः 5.00 रुपए

यह किफायती संस्करण अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है।

प्रकाशकः **एकलव्य,** ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in
pitara@eklavya.in

मुद्रकः भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल (0755) 246 3769

एक थी रूसी, एक थी पूसी। दोनों में गाढ़ी दोस्ती थी। एक दिन रूसी चित्र बना रही थी। तभी पूसी आई और छलाँग मारकर कुर्सी की पीठ पर जा बैठी।

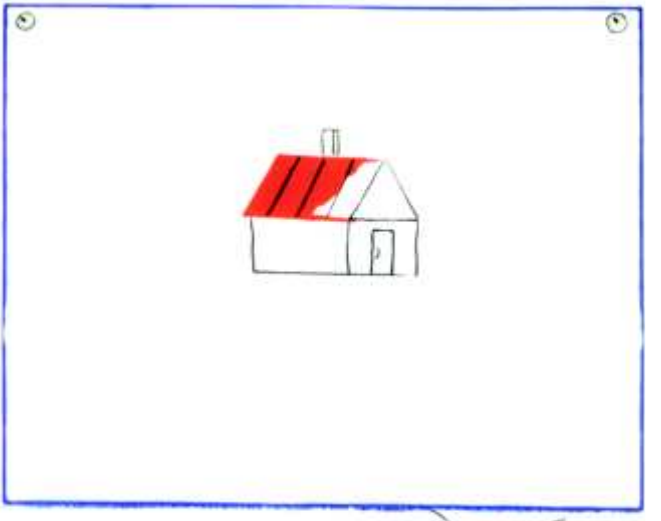

“यह तुम क्या कर रही हो?”
पूसी ने पूछा।

“मैं तुम्हारे लिए एक घर
बना रही हूँ,” रूसी बोली,
“देखो, यह इसकी छत है
और उसके ऊपर चिमनी।
और यह रहा दरवाज़ा।”

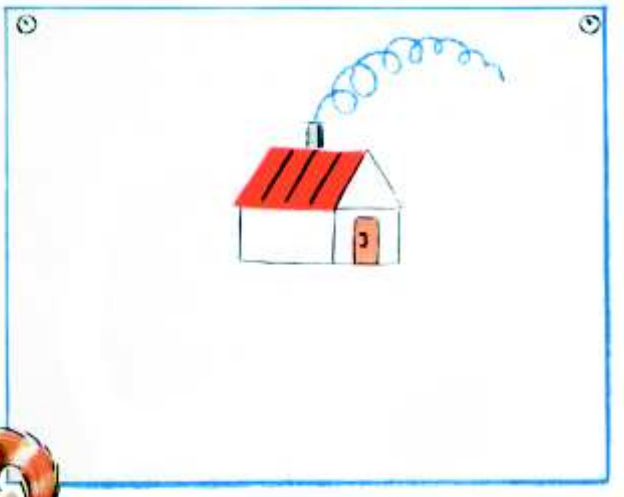

“पर मैं वहाँ जाकर
क्या करूँगी?”
पूसी ने पूछा।

“तुम वहाँ अपना चूल्हा बनाना और उस पर खाना पकाना,” रूसी बोली। और रूसी ने चिमनी से निकलता धुआँ भी चित्र में बना दिया।

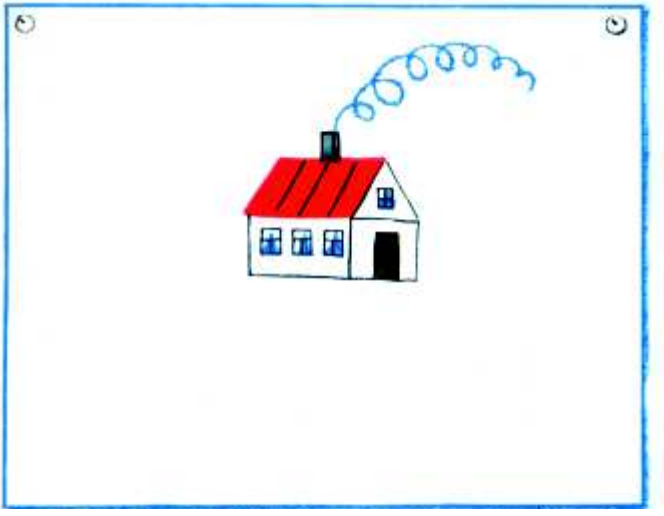

“पर... पर... खिड़की कहाँ है? बिल्ली तो खिड़की में से कूदकर ही अन्दर जाती है न।” पूसी ने थोड़ा ज़ोर लगाकर कहा।

“ये रही खिड़कियाँ! एक, दो, तीन चार।” रूसी बोलती गई और चित्र में खिड़कियाँ बनाती गई।

“लेकिन मैं टहलने कहाँ जाऊँगी?” पूसी ने छोटे बच्चे की तरह पूछा।

"यहाँ!"

और रूसी ने झट से घर के चारों ओर बाड़ बना दी। फिर बोली, "और यह रहा बगीचा!"

पूसी ने देखा और आँखें तरेरकर बोली, "इतना छोटा-सा? और इसमें तो कुछ उगा ही नहीं है।"

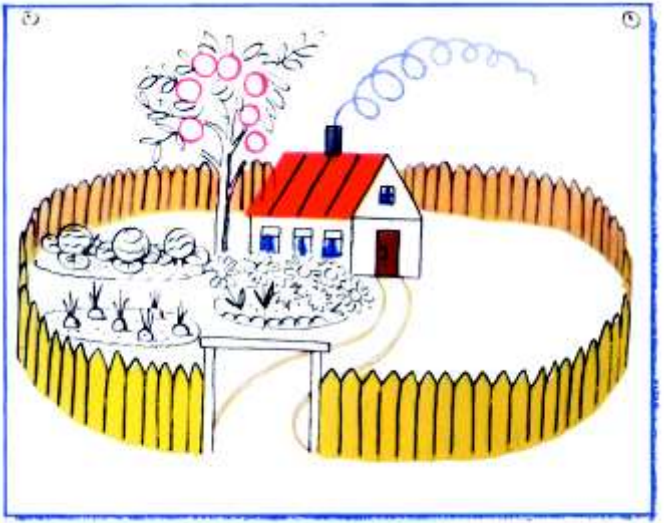

“सब्र करो,” रूसी बोली। “देखो ये रही फूलों की क्यारी। यह है अमरूद का पेड़। और ये देखो गाजर और गोभी की क्यारी।”

“गोभी!” पूसी ने बुरा-सा मुँह बनाया और बोली, “पर मैं मछलियाँ कहाँ पकडूँगी?”

"यहाँ," कहकर रूसी ने जल्दी से एक छोटा डबरा बनाया, जिसमें तीन मछलियाँ तैर रही थीं।

पूसी ने अपनी जीभ से चटकारा लिया और बोली, "ये हुई बढ़िया बात...! पर यहाँ कोई पक्षी-वक्षी भी हैं कि नहीं? मुझे पक्षी भी पसन्द हैं।"

“हाँ.... हाँ क्यों नहीं! ये रही एक मुर्गी, एक मुर्गा और तीन चूज़े। और एक बत्तख भी।” रूसी ने जल्दी-जल्दी अपने चित्र में सबको बनाया।

पूसी ने अपने पंजों को जीभ से साफ किया। फिर आँखें चमकाती हुई बहुत ही नरम आवाज़ में बोली, “और इस घर में कोई चूहा तो होगा ही।”

“नहीं! कोई चूहा-वूहा नहीं होगा।” रूसी ने तेज़ लहज़े में कहा।

“फिर मेरे घर की रखवाली कौन करेगा?” पूसी ने उतने ही ज़ोर से पूछा।

रूसी ने जल्दी-जल्दी चित्र में कुछ बनाया और बोली, “देखो ये कुत्ता तुम्हारे घर की रखवाली करेगा।”

कुत्ते का नाम सुनते ही पूसी तमककर खड़ी हो गई। उसकी मूँछें फैल गईं। शरीर के रोंगटे खड़े हो गए। पूँछ तन गई।

“मुझे तुम्हारा यह घर बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। मुझे नहीं रहना इसमें।” पूसी रूठकर वहाँ से चली गई।

अब तुम्हीं बताओ, कैसे मनाया जाए पूसी को।

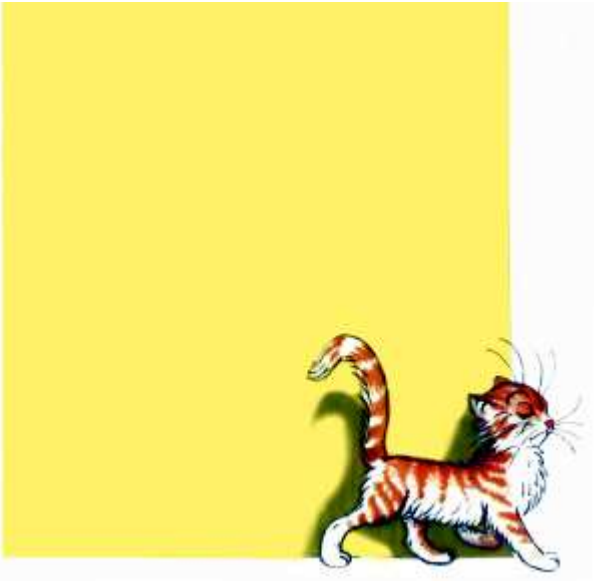

रूसी और पूसी

एक चित्रकथा

वी. सुतेयेव

एकलव्य का प्रकाशन